● **पढ़ो और समझो :**

५. आलस का सुख

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विकृतियों पर कुठाराघात किया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि तुम बिना कुछ किए दो दिन बैठे रहे तो ...

जरा सोचो तो की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से उनकी दिनचर्या संबंधी प्रश्न पूछें ।
- बिना कुछ किए दिन कैसे व्यतीत होगा, चर्चा कराएँ ।
- 'आलस्य मानव प्रगति में बाधक है' विषय पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।
- वे आलसी या कृतिशील बनेंगे ? क्यों ? बताने का अवसर दें ।

प्राचीन काल से ही लोग परिश्रम को महत्त्व देते रहे हैं । परिश्रमी और सफल लोगों का सम्मान करते हैं । वे कभी आलसी लोगों पर विशेष ध्यान ही नहीं देते हैं । समाज में आलस को सामाजिक और व्यक्तिगत बुराई माना जाता रहा है । ''जो सोवत हैं, वो खोवत हैं जो जागत हैं, सो पावत हैं'' जैसी कहावतों के माध्यम से आलसी लोगों को धमकाने और ''आलसस्य कुतो विद्या'' जैसे श्लोकों के जरिए उनको सामाजिक रूप से जलील करने/ताने कसने के प्रयास अनंतकाल से जारी हैं फिर भी उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती । ये आलसी सर्वव्यापी हैं । वे आप को पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सब जगह मिल जाएँगे ।

अपने संचार माध्यमों के चैनलों को ही देख लीजिए । आज तक (चैनल नहीं) आलस और आलसियों का वजूद 'सेट मैक्स चैनल' पर 'सूर्यवंशम फिल्म' की तरह जस का तस बना हुआ है, जो ये दर्शाता है कि बुराई का विरोध करने से वो ज्यादा बढ़ती है । इसीलिए बुराइयों को कोसें नहीं बल्कि प्यार से पालें-पोसें और बड़ा होने पर उनके हाथ पीले और लाल करके घर से विदा कर दें । पुनः वापस न आने दें ।

दरअसल हर युग में अवतरित हुए जरूरत से ज्यादा लेकिन आवश्यकता से कम 'श्याणे-लोग' इस बात को समझने में नाकाम रहे हैं कि आलस कोई दुर्गुण नहीं है बल्कि ये तो दुनियादारी और मोहमाया से मुँह मोड़ लेने का एक आसान आध्यात्मिक तरीका है जिसमें व्यक्ति बिना किसी को तकलीफ दिए, 'बिना किसी गिव या टेक' के, सारे प्रलोभनों को 'ओवरटेक' करके, 'सिक्स लेन' वाले 'मोक्ष मार्ग' पर बिना कोई टोल टैक्स दिए अपनी गाड़ी और कल्पनाओं के घोड़े दौड़ा सकता है । न हींग लगे न फिटकरी, सब रंग चोखा ही चोखा । जिस दिन जालिम दुनिया ये समझ लेगी उसी दिन से सारी समस्याएँ बेईमानों की ईमानदारी की तरह छू मंतर हो जाएँगी । लेकिन ऐसा लगता है कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।

आलसी लोगों को चाहे कोई कितना भी भला-बुरा क्यों ना कहे लेकिन वे उसका कभी बुरा नहीं

❑ इस व्यंग्य के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से इस व्यंग्य में आए विचारों को स्पष्ट करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ ।

मानते। वे बहुत ही समझदार और भले लोग हैं । वे जानते हैं कि बुरा मानने के बाद गुस्सा उपजता है, जो कि झगड़े और कलह (और कलह से सुलह का रास्ता काफी दुर्गम होता है) को जन्म देता है । लोग एक-दूसरे का मुँह देखना पसंद नहीं करते, जिससे रिश्तों में दरार आने की संभावना रहती है और इस दरार को रोकने के लिए वो 'खंबुजा-सीमेंट' की तरह काम करती है । टीवी विज्ञापनों में कई सीमेंट में जान बताई जाती है । कुछ लोग कितने नासमझ होते हैं । वे विज्ञापनों पर भरोसा कर लेते हैं । उन्हें ऐसे सारे विज्ञापनों के खिलाफ ज्ञापन देने की जरूरत है क्योंकि दरअसल 'जान' किसी सीमेंट में नहीं होती है बल्कि आलसी लोगों में होती है क्योंकि संबंधों के लिए वे अपना 'अहम' त्याग देते हैं लेकिन अपना आलस त्याग देंगे ऐसा 'वहम' किसी कीमत पर नहीं उपजने देते हैं । वैसे आजकल बहुत से लोग सयाने हो गए हैं । विज्ञापन देखते हैं और भूल जाते हैं । विज्ञापनों पर विश्वास नहीं करते । सुनते सबकी हैं, करते अपने मन की हैं ।

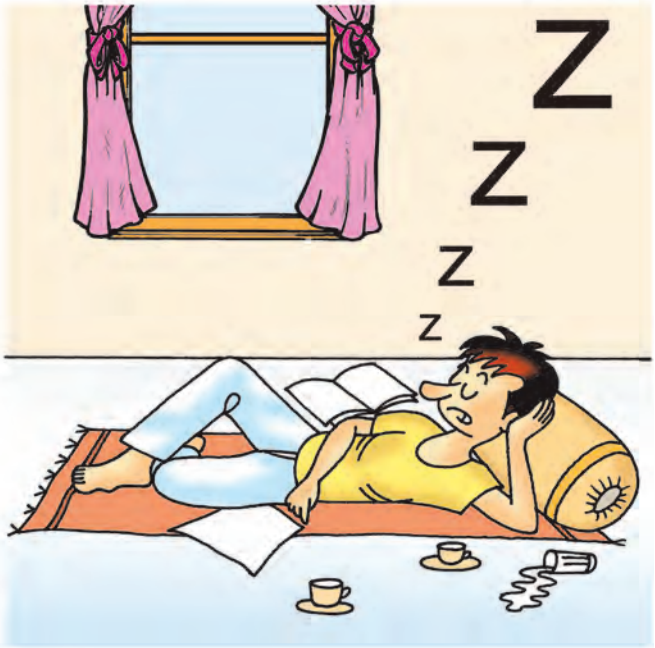

आज के भौतिकतावादी युग में सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने में आलसी महापुरुष अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं । जहाँ अधिकतर लोग सफलता मिलने के बाद बदल जाते हैं और इवन-डे पर अपनी मँहगी कार में और ओड-डे पर अपने अभिमान पर सवारी करने लगते हैं वहीं आलसी लोगों से सभ्य समाज को ऐसा कोई खतरा नहीं हैं । काम और सफलता इन दो शब्दों से आलसी लोगों का वही संबंध होता है जो कि 'लाल-किला बासमती चावल' से लाल किले का है । लेखक और प्रकाशक की 'संयुक्त-गलती' से 'काम और सफलता' जैसे शब्द आलसियों की डिक्शनरी में होते तो हैं लेकिन उन्हें देखते ही वो पन्ना पलट देते हैं ताकि उनकी किस्मत का पासा न पलट पाए और वो आलस के अलावा किसी अभिमान या स्वाभिमान का शिकार न हो पाएँ ।

यहाँ पर ये 'अस्पष्ट' कर देना जरूरी है कि आलसी लोग किसी भी कार्य या मेहनत से नहीं घबराते हैं । वे भला बिस्तर से नहीं घबराते, पड़े-पड़े खाने से नहीं घबराते, टीवी. पर कार्यक्रम, पिक्चर देखने से नहीं घबराते तो कार्य से क्या घबराएँगे । उनको केवल इस बात का डर सताता है कि उनके काम करने से कहीं 'सोने' के भाव कम ना हो जाए । ये लोग इतने दयालु और परहित स्वभाव के होते हैं कि हर क्षेत्र में बढ़ती हुई 'गला-काट' प्रतिस्पर्धा को कम करने के उद्देश्य से काम ही नहीं करते हैं । न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी । जब वे मैदान में उतरेंगे ही नहीं तो स्पर्धा किससे करेंगे।

❑ इस पाठ में आलस्य के साथ-साथ किन-किन पर व्यंग्य किया गया है, सूची बनवाएँ । इस सूची के किन-किन मुद्दों से विद्यार्थी सहमत/असहमत हैं, पूछें । विद्यार्थियों को कोई व्यंग्य चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । अन्य व्यंग्य लेख पढ़ने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

कोई हास्य घटना पढ़ो और उसपर आधारित संवाद बनाकर प्रस्तुत करो ।

वस्तुतः वे लोग चाहते हैं कि 'काबिल' लोगों को मौका मिले और वे सफल होकर 'ड्यू डेट' से पहले अपने सभी 'बिल' भर सकें । इसके बदले इनको किसी सम्मान की आशा नहीं होती बल्कि ये तो केवल इतना ही चाहते हैं कि काबिल लोग अपनी सफलता का शोर मचा कर इनकी नींद खराब न करें । काबिल लोग जो करते हैं उसके खिलाफ लोग तो कभी आवाज नहीं उठाते फिर आलसी लोगों को ये क्यों बदनाम करते हैं । इसके अलावा आलसी लोगों पर कभी अपेक्षाओं और उम्मीदों पर खरा ना उतर पाने का आरोप नहीं लगता क्योंकि सपने में भी इनसे कोई उम्मीद या अपेक्षा नहीं रखी जाती । ये कभी किसी का दिल भी नहीं तोड़ते क्योंकि इन्हें दिन-रात खटिया तोड़ने से ही फुर्सत नहीं मिलती । वे इस दुनियादारी से कोई मतलब ही नहीं रखते उन्हें किसी से क्या लेना देना । बस अपने काम से काम । खाना-पीना, पड़े रहना बस ! वे दुनिया के झंझटों में नहीं पड़ना चाहते । यहाँ आकर वे गांधीजी के बंदर बन जाते हैं । इन बंदरों का अपना अर्थ लगा लेते हैं । वे न कुछ देखते हैं, न सुनते हैं और न ही बोलते हैं ।

वैसे वे किसी से डरते नहीं । आलसी लोग बिना दब के, कब के, समाज के हर तबके में अपनी पैठ सियाचिन की बर्फ की तरह जमा चुके हैं । मैंने पहले ही कहा है कि ये सर्वव्यापी हैं । ये आलसी यत्र-तत्र--सर्वत्र मिल जाएँगे । एक खोजो हजार मिलेंगे । तुम्हें फिल्में बहुत प्रिय हैं न । अब तुम अपनी फिल्मों को ही देख लो । कुछ फिल्म निर्देशक तो इतने आलसी होते हैं कि फिल्म की स्क्रिप्ट करने में ही तीन-चार साल निकाल देते हैं । वैसे ये डायरेक्टर्स हिम्मत करके थोड़ा आलस और दिखाएँ तो सरकारें पंचवर्षीय योजनाएँ बनाने और क्रियान्वित करने में भी इनकी मदद ले सकती हैं ताकि कर्मचारी, अधिकारी अपने ऑफिस के वातानुकूलित कार्यालयों में थोड़ा आराम कर सकें । उन्हें दौरों पर न जाना पड़े । वैसे उन्हें केवल अकाल और बाढ़ के ही दौरे अधिक पसंद हैं । सामान्य दौरों के खयाल से ही उन्हें दौरा पड़ने लगता है ।

अब तुम्ही सोचो कि ये आलसी कितने महत्त्वपूर्ण होते हैं । यदि ये महत्त्वपूर्ण न होते तो भला उनपर इतना लंबा लेख लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ती ? तुम भी इतने मग्न होकर उनके बारे में क्यों पढ़ते ? सच बताना, तुम्हें ये आलसी लोग पसंद आ रहे हैं न ! क्या कहा, हाँ या न ? चलो छोड़ो । जाने दो इन आलसियों को । अब अपने दूसरे भी काम करो । कितना समय दे रहे हो इनको । जरा अपना कान मेरे पास लाओ । एक राज की बात बतानी है । राज की बात यह है कि 'तुम कभी आलसी मत बनना ।'

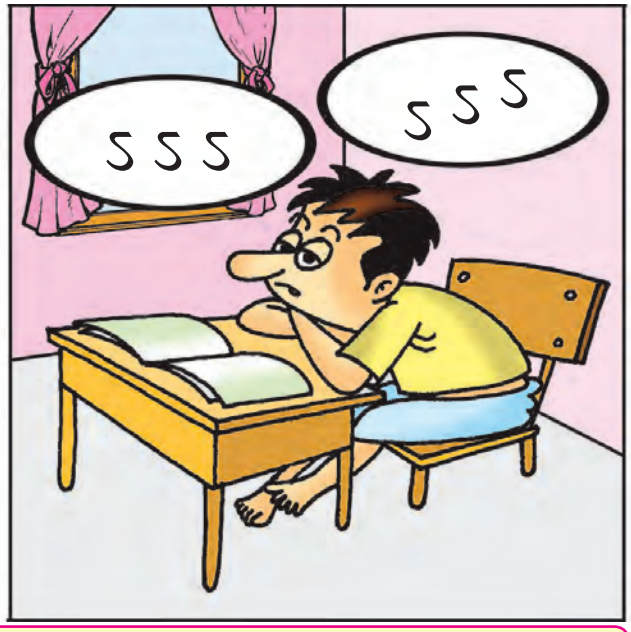

❑ विकारी शब्दों के भेदों पर चर्चा करें । पाठ में आए विकारी शब्दों की सूची बनवाएँ, वर्गीकरण कराएँ । प्रत्येक का अलग-अलग वाक्य बनाकर बताने के लिए कहें । संज्ञा, सर्वनामों में कारक लगने के पश्चात उनके जो रूप बनते हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक समझने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

वजूद = अस्तित्व
वहम = गलत सोच, शक
जालिम = जुल्म करने वाला
काबिल = योग्य
तबके = वर्ग

मुहावरे

जलील करना = अपमानित करना
ताना कसना = व्यंग्य मारना
कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ भी प्रभाव न पड़ना

कहावत

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी = न बड़ा प्रबंध होगा न बड़ा कार्य होगा ।

स्वयं अध्ययन

नियोजन बनाओ और उसपर अमल करो : 'शिक्षक दिवस' / 'विश्व हिंदी दिवस'

- कार्य विभाजन
- कार्यक्रम

सुनो तो जरा

नाट्यांश सुनो और सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत करो ।

बताओ तो सही

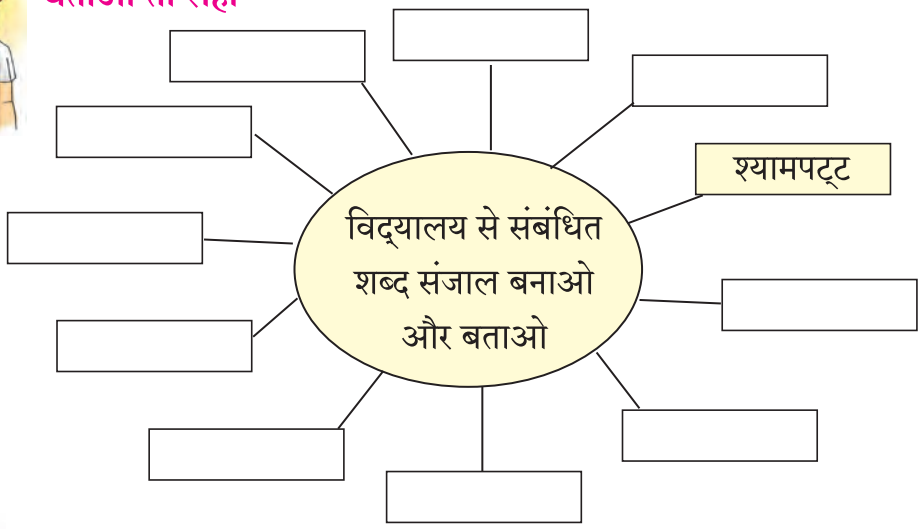

मेरी कलम से

अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव की निमंत्रण पत्रिका तैयार करो ।

खोजबीन

अंतरजाल से खोजकर व्यंग्य चित्रकारों के नामों का चार्ट तैयार करो ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय प्रतियोगिता का सूचना पत्र बनाओ ।

✲ पाठ के आधार पर आलसी व्यक्ति की विशेषताएँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

आलस्य मनुष्य की प्रगति में बाधक है ।

भाषा की ओर

सूचना के अनुसार दिए गए अविकारी शब्दों की सहायता से वाक्य बनाकर उनके नाम लिखो ः

अविकारी शब्द	निर्देश	वाक्य	प्रकार
धीरे-धीरे	[पुल्लिंग ए. व.]	रमेश धीरे-धीरे चलता है ।	क्रियाविशेषण अव्यय
आहिस्ता-आहिस्ता	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
कारण	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
परंतु	[पुल्लिंग ए. व.]		
अरे रे !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
अलावा	[पुल्लिंग ए. व.]		
और	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
भली-भाँति	[पुल्लिंग ए. व.]		
वाह !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		